International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 20-06-2019; Accepted: 22-07-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 5; September 2019; Page No. 45-47

रीवा जिला में माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग और हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग के छात्राओं के मानसिक सजगता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. कल्पना मिश्रा
पी–एच.डी. (शिक्षा), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग और हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग के छात्राओं के मानसिक सजगता का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा–11 एवं कक्षा–12 के कुल 200 छात्राओं में 100 अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग तथा 100 हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग के छात्राओं का मानसिक सजगता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग की छात्राओं की तुलना में हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग की छात्राओं की मानसिक सजगता अधिक पायी जाती है। इसका प्रमुख कारण यह हो सकता है कि अंग्रेजी माध्यम की कला वर्ग की छात्राओं की बौद्धिक क्षमता, अधिगम स्तर तथा विषयवस्तु के प्रति रुचि हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग की छात्राओं के सापेक्ष कम पायी जाती है।

मूल शब्दः रीवा जिला, माध्यमिक विद्यालय, कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग, मानसिक सजगता।

1. प्रस्तावना
माध्यमिक स्तर की आयुकाल सामान्यतः 13 साल से प्रारम्भ होकर 19–20 साल तक चलती है। इस स्तर में मानसिक क्षमता (Mental Ability) का विकास अपनी चरम सीमा पर होता है। मनोवैज्ञानिकों का आम मत है कि इस अवस्था के अन्त–अन्त तक छात्रों एवं छात्राओं की मानसिक क्षमता का विकास अधिकतम हो जाता है और जीवन के बाद के वर्षों में इस मानसिक क्षमता का मात्र सुदृढीकरण (Consolidation) होता है। इस अवस्था में किशोरों एवं किशोरियों की अभिरुचियाँ अधिक विस्तृत हो जाती है इस अभिरुचियों में सामाजिक अभिरुचियाँ तथा शैक्षणिक अभिरुचि (Educational Interest) का महत्व शिक्षा की दृष्टिकोण से अधिक महत्वपूर्ण होता है।
माध्यमिक स्तर के छात्राओं का मानसिक विकास लगभग पूर्णता को प्राप्त कर लेता है। वे अमूर्त चिन्तन व तर्क करने की क्षमता रखते हैं। अतएव इनकी शिक्षा–विधि में गृहकार्य पर अधिक बल देना चाहिए। डाल्टन प्लान का अधिकाधिक प्रयोग इस अवस्था में किया जा सकता है। रेडियो, टेलीविजन, पत्र–पत्रिकाओं आदि के माध्यम से भी बहुत कुछ सिखाया जा सकता है। इनमें सृजनात्मक चिन्तन का विकास होता है। अतएव सृजनात्मक चिन्तन के विकास हेतु कदम उठाना विद्यालयों का कर्तव्य होता है। इससे उन्हें कवि, साहित्यकार गणितज्ञ, वैज्ञानिक, कलाकार आदि बनाया जा सकता है। विद्यालय में त्रैमासिक पत्रिकाओं के निकालने से इस दिशा में छात्रों को बड़ा प्रोत्साहन मिलता है। वाद–विवाद प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, कवि गोष्ठी, विज्ञान तथा गणित के क्लब आदि का विद्यालयों में आयोजन करके छात्रों को सृजनात्मक चिन्तन की ओर प्रेरित किया जा सकता है। स्वाध्याय पर बल देना, पुस्तकालयों एवं वाचनालयों में पढ़ने की आदत डालना आदि भी बहुत आवश्यक होता है। इस अवस्था के छात्रों में सामान्य ज्ञान की वृद्धि में भी रुचि उत्पन्न करना चाहिए। इसके लिए कभी सामान्य ज्ञान परीक्षण तथा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का भी आयोजन करना चाहिए। इससे छात्र–छात्राएँ, पत्र–पत्रिकाएँ एवं समाचार पत्रों को पढ़ने में रुचि लेते हैं। इससे इनका मानसिक विकास भी होता है और स्वाध्याय की प्रवृत्ति भी विकसित होती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी का यह विचार है कि वर्तमान समय के इस प्रतिस्पर्धात्मक दौर में आगे बढ़ने के लिए अंग्रेजी भाषा एवं अंग्रेजी माध्यम को अपनाना आवश्यक हो गया है। आधुनिकीकरण एवं वैज्ञानिक प्रगति की होड़ में बदलती हुई प्रतियोगी परिस्थितियों में नवाचार में इस विषय पर शोध करते रहना शिक्षा जगत के लिए बहुत उपयोगी प्रतीत होता है और औचित्यपूर्ण है। आशा है कि इस शोध के द्वारा इस क्षेत्र में शिक्षा जगत को एक नई दिशा प्रदान हो सकेगी।

3. शोध की परिकल्पनाएँ
1. माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग और हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग के छात्राओं के मानसिक सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. उद्देश्य
- माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग और हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग के छात्राओं के मानसिक सजगता में सार्थक अन्तर ज्ञात करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन
प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। अध्ययन में रीवा जिला के माध्यमिक शिक्षा मंडल म.प्र. तथा केन्द्रीय शिक्षा परिषद से मान्यता माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में कक्षा–11 तथा कक्षा 12 की सभी अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग तथा हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग के छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
समष्टि व प्रतिदर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन कक्षा–11 एवं कक्षा–12 के कुल 200 छात्रों पर किया गया है जिसमें अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग के 100 छात्राएँ तथा 100 हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग का छात्राएँ सम्मिलित है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधिः** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में डॉ0 आर0पी0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत सामान्य मानसिक सजगता परीक्षण का प्रयोग किया गया है जिसमें न्यादर्श के छात्र–छात्राओं की मानसिक सजगता का मापन किया गया है। इस परीक्षण पुस्तिका में कुल 100 प्रश्न रखे गये हैं। सभी प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं तथा इन प्रश्नों में गणितीय तर्कशक्ति, परिभाषा सम्बन्धी, अंकीय ग्रंथमाला तथा समानार्थी विलोमार्थी जैसे योग्यता की परख वाले प्रश्नों को रखा गया है। इन प्रश्नों के द्वारा छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता जैसे– सतर्कता, शीघ्र क्रिया के लिए तैयार रहना, सक्रियता प्रत्येक क्षण समान भाव इत्यादि का परीक्षण किया जायेगा।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, रीना (2007)[1], गुप्ता एस.पी. (2001)[2], मेहता, सी. (1970)[3], निगम, बी. के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[4], पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[5], पाण्डेय, आर.एस. (1997)[6], पाठक, पी.डी (2007)[7], राज्य शैक्षिक प्रबन्ध एवं प्रशिक्षण संस्थान (2002)[8], राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (1998)[9] ने शोध विधि एवं छात्र–छात्राओं के मानसिक सजगता से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय

मध्यप्रदेश का रीवा जिला 24°18′ से 25° उत्तरी अक्षांश तथा 81°12′ से 82°8′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का क्षेत्रफल 6314 वर्ग किलोमीटर है। रीवा जिला समुद्र से 380 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। रीवा जिले के उत्तर में उत्तरप्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व में उत्तरप्रदेश का मिर्जापुर जिला, दक्षिण में मध्यप्रदेश का सीधी जिला तथा पश्चिम में मध्यप्रदेश का सतना जिला स्थित है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग और हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग के छात्राओं के मानसिक सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्र. 1: माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग और हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग के छात्राओं के मानसिक सजगता में सार्थकता का अध्ययन

समूह		माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग की छात्रायें	माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग की छात्रायें
समूह की संख्या (N)		100	100
मध्यमान (M)		60.59	65.80
मानक विचलन (D)		3.74	3.47
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		5.21	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

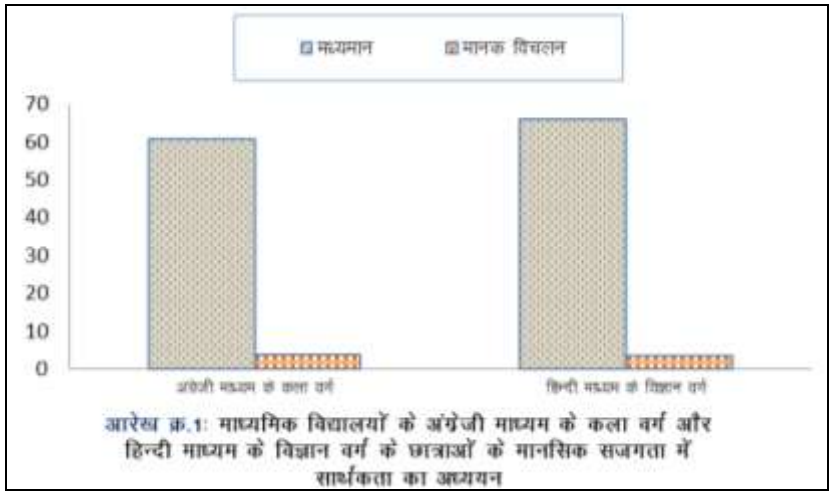

आरेख क्र.1: माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग और हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग के छात्राओं के मानसिक सजगता में सार्थकता का अध्ययन

उपर्युक्त तालिका में माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग और हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग की छात्राओं की मानसिक सजगता का अध्ययन किया गया। जिसमें दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 60.59 तथा 65.80 एवं मानक विचलन क्रमशः 3.74 तथा 3.47 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के CR की गणना की गयी जिसका मान 5.21 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2. 58 से अधिक है। इससे यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों की मानसिक सजगता में सार्थक अन्तर है।

अतः उपरोक्त के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग की छात्राओं की मानसिक सजगता का मध्यमान हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग की छात्राओं के मानसिक सजगता के मध्यमान से कम हैं और इन दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

इस प्रकार शोधकर्ता की परिकल्पना–''माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग और हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग की छात्राओं की मानसिक सजगता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' अस्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम के कला वर्ग और हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग की छात्राओं की मानसिक सजगता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। शोध में दोनों समूहों की छात्राओं के मानसिक सजगता में सार्थक अन्तर प्राप्त होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी माध्यम की कला वर्ग की छात्राओं की बौद्धिक क्षमता, अधिगम स्तर तथा विषयवस्तु के प्रति रुचि हिन्दी माध्यम के विज्ञान वर्ग की छात्राओं के सापेक्ष अधिक पायी जाती है। वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावी रूप से संचालित की जा रही है तथा इन विद्यालयों में शिक्षा का स्तर भी प्रभावी है।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.
2. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
3. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
4. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
5. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
6. पाण्डेय, आर.एस. – 'एजूकेशन एस्टर डे एण्ड टुडे' (एक विश्लेषण) हॉरिजन पब्लिशर्स, इलाहाबाद, 1997.
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.
8. राज्य शैक्षिक प्रबन्ध एवं प्रशिक्षण संस्थान – ''अभिनव'' शैक्षिक प्रबन्धन पत्रिका, सीमेट, एलनगंज, इलाहाबाद, 2002.
9. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद – शैक्षिक प्रेक्षक (समाचार), उ0प्र0 सभी के लिए शिक्षा परियोजना, निशातगंज, लखनऊ, 1998.